Department of political science
D.B. College, Jaynagar
B.A - IIIrd — Pub-Ad-

BY- DR. A.K. Yadav
Asstt Prof G.P.T.T
Political science

Date-05-10-2020

Lecture-No-05

नियंत्रण का विस्तार
(Span of control)

नियंत्रण का विस्तार संगठन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। संगठन या प्रशासन के सुसंचालन के लिए नियंत्रण की आवश्यकता पड़ती है। इस व्यवस्था का उद्देश्य यह देखना होता है कि संगठन अथवा प्रशासन की इकाई से कर्मचारी दिए गए आदेशों एवं नियमों के मुताबिक काम कर रहे है या नहीं, वास्तव में इस व्यवस्था के मार्फत ही प्रशासनिक कार्यों में सक्रियता गतिशीलता एवं व्यवस्था बहाल रहती है।

नियंत्रण का विस्तार से अभिप्राय अधीनस्थ कर्मचारियों की उस संख्या से है जिसके कार्यों का अधीक्षण एवं नियंत्रण एक अधिकारी क्षमतापूर्वक कर सकता है। इस सिद्धांत के मुताबिक किसी भी अधिकारी के नियंत्रण का क्षेत्र केवल उतना ही रहना चाहिए जितना वह कुशलतापूर्वक अपने दायित्वों को संभाल सके। अधिकारी की क्षमता से अधिक या कम क्षेत्र का होना ठीक नहीं है अर्थात यदि पदाधिकारी के अनुभव, मनोवैज्ञानिक योग्यता एवं क्षमता के अनुसार उसे कार्य प्रदान किए जाए तो उससे बेहतर लाभ उठाया जा सकता है।

'नियंत्रण के विस्तार' के विषय में लोकप्रशासन के विद्वानों के बीच मतभेद है। हेनरी फेयोल के मतानुसार "एक बड़े संगठन के शीर्षस्थ पदाधिकारी जिसे प्रबन्धक या मुख्य कार्यपालक के नाम से जाना जाता है, के नीचे पाँच से लेकर छः तक ही अधीनस्थ पदाधिकारी रहने चाहिए।" हेनरी फेयोल के इस विचार से — ग्रेकूनास (Graicunas) भी सहमत है क्योंकि उनके मतानुसार भी एक उच्च पदाधिकारी के निर्देशन में पाँच से छः तक पदाधिकारी रहने चाहिए। जबकि एल उर्विक का विचार इन लोगों से थोड़ा हटकर है। उनका कहना है कि "उच्च पदाधिकारियों के लिए आदर्श संख्या चार होगी और निम्न पदाधिकारी के लिए आठ से बारह तक।"

Scanned with CamScanner

स्पष्ट है कि नियंत्रण का विस्तार के सम्बन्ध में किसी एक सुनिश्चित मत का अभाव है। इसलिए यह कहना सही ही है कि संगठन में कर्मचारी की आदर्श संख्या की खोज करना जिस पर कि एक उच्चाधिकारी नियंत्रण रखने में सक्षम हो, निरर्थक है। प्रशासन की गतिशीलता ही प्रशासन की सफलता का सूचक है और यह प्रशासनिक सफलता बहुत हद तक शीर्षस्थ अधिकारी की योग्यता, नेतृत्व कुशलता और प्रशासनिक अभिरुचि पर निर्भर करती है कि वह कितने अधीनस्थ पदाधिकारियों पर नियंत्रण व निर्देशन की क्षमता रखता है। फिर भी विद्वान यह निश्चित करने के लिए अवश्य प्रयत्नशील हैं कि 'नियंत्रण का विस्तार' क्या करना चाहिए। विद्वानों के इस बात पर सामान्य - सहमति पाई जाती है कि —

(1) संगठन के तमाम स्तर पर एक निश्चित 'नियंत्रण का विस्तार' होता है जिसका पालन कार्य की गतिशीलता के लिए आवश्यक होता है। यदि इस सीमा की अवहेलना की जाती है तो कार्य अवरुद्ध हो सकता है।

(2) नियंत्रण का विस्तार में विविधता उत्पन्न करने वाले चार तत्व हैं — कार्य (Function), व्यक्तित्व (Personality), काल या समय (Time) और स्थान (space of place)

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'नियंत्रण का विस्तार' को निर्धारित करने में उपर्युक्त चारों कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

End

Conti- Next- Lecture-

Date-05-10-2020

Scanned with CamScanner